साहित्य अकादमी की स्वायत्तता

607. **श्री विश्वासराव रामराव पाटिल** : क्या **मानव संसाधन विकास मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने साहित्य अकादमी की स्वायत्तता को समाप्त करने के विचार से अपने हक नामनिर्देशितों का साहित्य अकादमी के अध्यक्ष के रूप में चयन करने के लिए एक परिपत्र जारी किया है;

(ख) क्या यह भी सच है कि तीन-सदस्यीय समिति के दो सदस्य सरकार द्वारा नियुक्त किए जाएंगे;

(ग) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या सरकार साहित्य अकादमी की स्वायत्तता को बनाए रखने के उद्देश्य से इस आदेश को वापस लेने का विचार रखती है; और

(ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग तथा संस्कृति विभाग) में उप मंत्री (कुमारी शैलजा) : (क) जी, नहीं।

(ख) एवं (ग) हक्सर समिति ने साहित्य अकादमी के अध्यक्ष का चयन करने के प्रयोजनार्थ एक तीन-सदस्यीय खोज समिति की सिफारिश की है। इसको सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। खोज समिति में तीन सदस्य हो सकते हैं, जिनमें से एक को अकादमी की महा परिषद द्वारा नामित किया जाएगा, जबकि भारत के राष्ट्रपति अन्य दो सदस्यों को नामित कर सकते हैं, जिनमें से एक अकादमी का पूर्व अध्यक्ष होगा।

(घ) एवं (ङ) ये प्रश्न नहीं उठते।

दिल्ली के नर्सरी स्कूलों में पाठ्य-पुस्तकें

608. **श्री अनन्तराम जायसवाल** : क्या **मानव संसाधन विकास मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण परिषद द्वारा हाल ही में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार दिल्ली के 58 प्रतिशत नर्सरी स्कूलों ने दो से तीन वर्ष की आयु के बच्चों के लिए 4 से 7 पाठ्य-पुस्तकें तथा 50 प्रतिशत नर्सरी स्कूलों ने 4 से 5 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए 8 से 11 पाठ्य-पुस्तकें निर्धारित की हुई हैं;

(ख) क्या सरकार इस तथ्य को महसूस नहीं करती है कि इतनी अधिक पाठ्य-पुस्तकें इतनी कच्ची उम्र के बच्चों के सम्पूर्ण मानसिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं; और

(ग) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग तथा संस्कृति विभाग) में उप मंत्री (कुमारी शैलजा) : (क) से (ग) राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा भेजी गई सूचना के अनुसार, परिषद् को नर्सरी स्कूलों के बच्चों के लिये प्रयोग में लायी जा रही उन अनेक पुस्तकों की जानकारी है, जिन्हें उन्होंने दिल्ली में किए गए अपने सर्वेक्षण में निर्दिष्ट किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 (1992 में किए गए संशोधनों के साथ) में यह परिकल्पना की गई है कि शिशु-देखभाल-शिक्षा के कार्यक्रम, बाल्योन्मुख होंगे तथा खेल और अलग-अलग बच्चे के स्वतंत्र व्यक्तित्व पर केन्द्रित होंगे और यह कि औपचारिक पद्धतियों तथा पढ़ने, लिखने तथा अंकगणित को, इस स्तर पर हतोत्साहित किया जाएगा। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद